SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

खेल नैतिकता का छात्रों के व्यक्तित्व मूल्यों एवं सामायोजन प्रक्रिया में भूमिका का अध्ययन

रामकुमार कुशवाहा, शोधार्थी, शारीरिक शिक्षा विभाग
ए. के. त्रिपाठी, (Ph.D.) शोध मार्गदर्शक, शारीरिक शिक्षा विभाग
रामचंद्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय, विश्रामपुर, पलामू, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
रामकुमार कुशवाहा
ए. के. त्रिपाठी (Ph.D.)

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 12/05/2023
Revised on : -----
Accepted on : 19/05/2023
Plagiarism : 05% on 12/05/2023

शोध सार

खेल मानव जीवन की एक क्रिया एवं रचनात्मक प्रवृत्तियां है, जो स्वाभाविकता, स्वतन्त्रता एवं आनन्द के लक्षणों के द्वारा अनुभव की जाती है। इसी सन्दर्भ में आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों का मत है कि बालक–बालिकाओं को खेलों द्वारा शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। खेल द्वारा शिक्षा पद्धति के सिद्धान्त पर ही शिक्षा जगत में भ्रमण शिक्षण, सरस्वती यात्राएँ, प्रोजेक्ट पद्धति, स्काऊट, आन्दोलन एवं सुरक्षा व सेवा शिक्षा यानि की एन. सी. सी एन. एस. एस. जैसे उपागम प्रचलित हैं। गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर भी बालकों की शिक्षा के लिए उनकी नैसर्गिक प्रवृत्तियों का प्रयोग करने के हिमायती थे। उनका मानना था कि ''पेड़ों पर व जीवन के अनुभवों एवं व्यवहार विज्ञान के निष्कर्षों से आज यह तथ्य पूर्णतः सिद्ध है कि जो बालक खेलों में भाग लेते हैं वे उच्च एवं व्यापक व्यक्तित्व के धनी होते हैं। साथ ही वे बालक – बालिकाएँ जीवन विकास व उपलब्धियों के पटल पर अग्रणी होते हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास में खेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन खेलों द्वारा बालकों में त्वरित निर्णय क्षमता, वस्तुओं की जानकारी, समायोजन, समन्वय, सद्भाव, साहस, सह अस्तित्व जैसे गुणों का स्वभाव में स्वतः ही विकास हो जाता है। सामान्यतया 'व्यक्तित्व' शब्द किसी ऐसे गुण या विशेषता को इंगित करता है, जिसे सभी व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करने तथा पारस्परिक सम्बन्धों की दृष्टि से विशेष महत्व प्रदान करते हैं। साधारणतः व्यक्तित्व से तात्पर्य शारीरिक गठन, रंग रूप, वेशभूषा, बातचीत के ढंग, कार्य व्यवहार जैसे विभिन्न गुणों के संयोजन से लगाया जाता है। एक अच्छे व्यक्तित्व का अर्थ है कि उस व्यक्ति की शारीरिक रचना सुन्दर है, वह स्वस्थ एवं मृदुभाषी है, उसका स्वभाव एवं चरित्र अच्छा है

और वह सहज ही दूसरे को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। विद्यालय में एकल व समूह दोनों रूपों में खेले जाते हैं। दलीय खेलों में भाग लेने पर नेतृत्व के गुण खिलाड़ी मे स्वतः ही विकसित होने लगते हैं। प्रत्येक समूह खेल में दल का एक नेता होता है वह अपने दल के खिलाड़ियों को कुशल नेतृत्व प्रदान करता है। नेतृत्व एक ऐसा पक्ष है जो सामाजिक प्रभावशीलता, अनुभव अथवा अधिगम के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। सामाजिक प्रभावशीलता को हम खेल के मैदान में देख सकते हैं, व्यायामशालाओं में और ग्रीष्मकालीन शिविरों में भी इसे देखा जा सकता है। एक जनतान्त्रिक नेता मानवीय आवश्यकताओं के आधार पर अपने सहयोगियों की अनदेखी नहीं करता और अधिकारी बनने की प्रवत्तियों से दूर रहते हुए विषय–वस्तु पर अपना ध्यान लगाता है। समूह के लोगों को प्रभावित करता है और उनके मूल्यों के साथ अपनी सहभागिता रखता है। समूह के लोग अपने नेता की इच्छा के अनुसार कार्य करना चाहते हैं वे जानते हैं कि उनका नेता उनसे क्या और कौन सा कार्य करवाना चाहता है ? जनतान्त्रिक नेता अपने समूह के अन्य लोगों को सोद्देश्य मार्ग दर्शन देता है व सहयोग करता है। वह एक समन्वित सामाजिक समूह का विकास करता है, चाहे वह फुटबाल, हॉकी या अन्य किसी खेल की टीम हो, वह सब में अधिक से अधिक क्षमताओं का निरूपण करना चाहता है।

मुख्य शब्द

खेल नैतिकता, व्यक्तित्व मूल्य एवं सामायोजन, छात्र.

परिचय

खेल मानव जीवन की एक क्रिया एवं रचनात्मक प्रवत्तियों है, जो स्वाभाविकता, स्वतन्त्रता एवं आनन्द के लक्षणों के द्वारा अनुभव की जाती है। इसी सन्दर्भ में आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों का मत है कि बालक – बालिकाओं को खेलों द्वारा शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। खेल द्वारा शिक्षा पद्धति के सिद्धान्त पर ही शिक्षा जगत में भ्रमण शिक्षण, सरस्वती यात्राएँ, प्रोजेक्ट पद्धति, स्काऊट, आन्दोलन एवं सुरक्षा व सेवा शिक्षा यानि की एन. सी. सी., एन. एस. एस. जैसे उपागम प्रचलित हैं। गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर भी बालकों की शिक्षा के लिए उनकी नैसर्गिक प्रवत्तियों का प्रयोग करने के हिमायती थे। उनका मानना था कि ''पेड़ों पर च जीवन के अनुभवों एवं व्यवहार विज्ञान के निष्कर्षों से आज यह तथ्य पूर्णतः सिद्ध है कि जो बालक खेलों में भाग लेते हैं वे उच्च एवं व्यापक व्यक्तित्व के धनी होते हैं। साथ ही वे बालक – बालिकाएँ जीवन विकास व उपलब्धियों के पटल पर अग्रणी होते हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास में खेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन खेलों द्वारा बालकों में त्वरित निर्णय क्षमता, वस्तुओं की जानकारी, समायोजन, समन्वय, सद्भाव, साहस, सहअस्तित्व जैसे गुणों का स्वभाव में स्वतः ही विकास हो जाता है

इस समय भारतीय क्रिकेट टीम ऑस्ट्रलिया दौरे पर है जहाँ सिडनी टेस्ट के दौरान भारतीय खिलाड़ियों पर नस्लभेदी टिप्पड़ी की गई तथा ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर स्टीव स्मिथ द्वारा किये गए भारतीय क्रिकेटर ऋषभ पंत के बैटिंग मार्क्स को मिटाने का प्रयास किया गया। इन दोनों ही स्थितियों में खेल भावना दूषित हुई तथा एक बार खेल नैतिकता के आयामों पर विवाद का जन्म हुआ। खेल जो की व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का एक माध्यम है, वहां पर होने वाले अनैतिक क्रियाकलाप को स्वीकार्यता देना एक प्रकार से खेल तथा खेल भावना का अपमान है।

नैतिकता

नैतिकता मानव समाज का एक अभिन्न अंग है। हमारे द्वारा किए गए किसी भी निर्णय में नैतिक आधार होता है। मानव समाज में नैतिकता की भूमिका वांछित या अवांछित क्या है यह निर्धारित करने में निहित है। इस प्रकार, नैतिकता एक दार्शनिक अवधारणा है जिसमें सही और गलत की अवधारणाओं को व्यवस्थित करना, बचाव करना और अनुशंसा करना शामिल है। यह जरूरी है कि मनुष्यों के नैतिक व्यवहार को शामिल किया जाए। नैतिकता अच्छे और बुरे, सही और गलत, गुण और उपाध्यक्ष और अन्याय की चिंताओं से संबंधित है। हालांकि, नैतिकता अच्छे जीवन की ओर एक चिंता से प्रेरित होती है। अगर कुछ मानव जाति के अच्छे होने की दिशा में ड्राइव के विपरीत है, जिसे नैतिक रूप में नहीं देखा जा सकता है। यही कारण है कि, कई दार्शनिकों ने अच्छे जीवन की अवधारणा

के लिए महान मूल्य का श्रेय दिया है।

व्युत्पन्न रूप से, 'नैतिकता, 'शब्द लैटिन रूट शब्द 'एथोस' से लिया गया है जिसका अर्थ चरित्र, आदत, रीति–रिवाज आदि है। इस अर्थ में, नैतिकता 'नैतिक दर्शन' के बहुत करीब है। इस प्रकार, नैतिकता का अध्ययन मानवीय सुख के साधन के रूप में, उनके अधिकार के दृष्टिकोण से मानव कार्यों के व्यवस्थित अध्ययन के रूप में किया जा सकता है। इस प्रकार, नैतिकता की धारणा को जरूरी रूप से न्यायसंगत खुशी के मार्ग की ओर, समाज में, बड़े और व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन करने के साधन के रूप में विकसित किया गया है।

दार्शनिक अनुशासन के रूप में, नैतिकता उन मूल्यों और दिशानिर्देशों का अध्ययन है जिनके द्वारा हम रहते हैं। नैतिकता एक नैतिक ढांचा प्रदान करती है जिसमें मनुष्य कानूनी रूप से अपने अंत का पीछा करने के लिए कार्य कर सकते हैं। इसमें उन मूल्यों और दिशानिर्देशों का औचित्य शामिल है। सभी मूल्यों और सिद्धांतों का मूल्यांकन और विश्लेषण कुछ सार्वभौमिक सिद्धांतों के प्रकाश में किया जाता है, जो हर जगह मानव समाज के लिए प्रिय हैं।

नैतिक दर्शन के रूप में, नैतिकता नैतिकता, नैतिक समस्याओं और नैतिक निर्णयों के बारे में दार्शनिक सोच है। नैतिकता एक विज्ञान है, इस अर्थ में, यह एक तार्किक क्रम में आयोजित तर्कसंगत सच्चाई के शरीर का एक सेट है और एक विशिष्ट सामग्री और वस्तु है। यह एक विज्ञान है कि मनुष्यों को क्या होना चाहिए। यह एक तर्कसंगत विज्ञान बन गया है, इस अर्थ में, नैतिकता के सिद्धांत मानव कारण से कम किए जाते हैं, और व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा से संबंधित हैं। नैतिकता भी एक मानक और विनियामक अनुशासन है, क्योंकि यह मानव कार्यों को विनियमित और निर्देशित करने और व्यक्ति पर सही अभिविन्यास प्रदान करने की तलाश में है।

एक अनुशासन के रूप में, नैतिकता के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलू हैं। सैद्धांतिक रूप से, नैतिकता बुनियादी सिद्धांतों को प्रदान करती है और जानती है कि किस नैतिक निर्णय पर पहुंचे हैं। एक व्यावहारिक अनुशासन के रूप में, नैतिकता व्यक्ति के जीवन से संबंधित है, और विशेष सिरों से संबंधित हैं, और उन्हें प्राप्त करने के साधन हैं।

वर्तमान दुनिया में नैतिकता का महत्व

आज, मानव जाति नैतिक मूल्यों में गिरावट का सामना कर रही है। इसके कारण, लगातार संघर्ष और टकराव होते हैं, जो अक्सर खूनी रूप लेते हैं, जबकि हमारी प्रौद्योगिकी और क्षमताओं में कई गुना सुधार हुआ है। मानव समाज की मूल्य प्रणाली में एक उल्लेखनीय गिरावट आई है। सुन्दरता और भौतिकवाद की पंथ ने विभिन्न व्यक्तियों के बीच संबंधों को बदनाम कर दिया है। मैक्रो स्तर पर, यह मानव समाज की खूनी युद्ध और बदसूरत तस्वीरें पैदा करता है। महान शक्ति के साथ महान जिम्मेदारी आती है, लेकिन जिम्मेदारी बहुत सावधानी से खड़ी होनी चाहिए। आज मानव क्षमताओं के परिमाण को देखते हुए, निर्णय लेने में गलतियाँ लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकती हैं। तकनीकी सुधार के साथ, दुनिया को नुकसान पहुंचाने की मनुष्य की क्षमता में भी वृद्धि हुई है, जिसने मानव निर्मित दुनिया में मानव निर्मित आपदाएं लाई हैं। इस संदर्भ में, अच्छे के लिए मानव निर्णयों को मार्गदर्शन करने के लिए नैतिकता तस्वीर में आती है।

खेल नैतिकता

खेल नैतिकता दो शब्दों का मिश्रण है– खेल तथा नैतिकता। नैतिकता दर्शनशास्त्र की एक शाखा है तथा खेल को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए एक मानवीय गतिविधि के रूप में स्वीकारा जा सकता है। इस स्थिति में खेल नैतिकता से तात्पर्य उस सकारात्मक अवधारणा से है जो खेल के दौरान व्यक्तियों के व्यवहार को निर्धारित करती है।

खेल नैतिकता के सम्बन्ध में मुख्य बिन्दु

खेल नैतिकता में नस्ल, धर्म, समाज के कुरीतियों से ऊपर उठकर खिलाडी खेल का प्रदर्शन करते हैं। इस प्रकार खेल शारीरिक तथा मानसिक विकास में सहयोग प्रदान करता है। कहीं न कहीं खेलो में दिखाए गई भावनाओ ने अंतर्राष्ट्रीय सौहार्द को भी बढ़ाया है। फुटबाल, क्रिकेट विश्वकप तथा ओलम्पिक खेल वैश्विक एकता तथा

सांस्कृतिक आदान–प्रदान में सहयोगी होते हैं।

खेल नैतिकता स्वयं में कई मूल्यों का समन्वय है इसके बेहतर प्रदर्शन से खिलाड़ी आम जनता के लिए प्रतीक बनता है। भारतीय क्रिकेट खिलाडी सचिन तेंदुलकर का नाम इस क्षेत्र में सभी के लिए एक मिसाल है। परन्तु जब खेल में खेल भावना के स्थान पर गेममैनशिप (जीतना ही सब कुछ है) को महत्व दिया जाता है तब खेल नैतिकता प्रभावित होती है। गेममैनशिप के लिए कई बार खिलाडी ड्रग्स, बेईमानी, छींटाकशी तक का सहारा लेते हैं जो खेल नैतिकता पर बुरा प्रभाव डालता है। इसके साथ ही खेलो में अवसर के लिए रिश्वत ,यौन उत्पीडन के मामले सामने आये हैं, जिनसे खेल नैतिकता पर बुरा प्रभाव पड़ा है।

खेल नैतिकता की संभावनाएं

खेल नैतिकता में निष्पक्षता, योग्यता प्रदर्शन के अवसर की समता, दुसरो के प्रति सम्मान ,उत्तदायित्व जैसे तत्व सम्मिलित होते हैं। इन तत्वों को खेलो की दुनिया में ''स्पोर्ट्समैनशिप ''के नाम से जाना जाता है। अतः स्पोर्ट्समैनशिप में जीत के स्थान पर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को महत्व दिया जाता है। यह स्पोर्ट्समैनशिप ''टफ बट फेयर प्ले ''के सिद्धांत पर आधारित है। अतः खिलाड़ियों सहित खेल से जुड़े सभी लोगों को स्पोर्ट्समैनशिप के सिद्धांत को स्वीकार कर खेल में नैतिकता को बढ़ावा देने चाहिए।

राष्ट्रीय खेल नैतिकता आयोग विधेयक –2016

2016 में अनुराग ठाकुर (लोक सभा सदस्य) द्वारा राष्ट्रीय खेल नैतिकता आयोग की स्थापना के सन्दर्भ में निजी विधयेक लोकसभा में प्रस्तुत किया गया। ध्यातव्य है कि आईपीएल–2013 में हुए मैच फिक्सिंग के बाद इसकी आवश्यकता महसूस हुई थी। इसका विधयेक उद्देश्य राष्ट्रीय खेल नैतिक संस्था का गठन है जिसमें यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी खेलों में नैतिक गतिविधियां हो और साथ ही डोपिंग, मैच फिक्सिंग, आयु धोखाधड़ी, खेलों में महिलाओं के यौन उत्पीड़न का उन्मूलन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाये जा सके। इस विधयेक में मैच फिक्सिंग के मामले में खिलाड़ी पर न सिर्फ आजीवन प्रतिबंध लगेगा, बल्कि उसे 10 साल जेल की सजा और रिश्वत की राशि का पांच गुना अर्थदंड भी सम्मिलित होगा। आयु या लिंग की धोखाधड़ी पर छह महीने की जेल और एक लाख रुपये का जुर्माना होगा। इस तरह की आपराधिक गतिविधियों में मदद करने वाले कोच और खेल महासंघों के सदस्य भी इसी कानून के अंतर्गत दंड के भागीदार होंगे। 'राष्ट्रीय खेल नैतिक आयोग'में न्यायाधीशों के अलावा जानी–मानी खेल हस्तियां शामिल होंगी। आयोग के पास सुनवाई और सजा निर्धारित करने का अधिकार होगा।

नैतिकता का खेल

नैतिकता का खेल एक शैली है मध्यकालीन तथा जल्दी ट्यूडर नाटकीय मनोरंजन का। अपने समय में, इसे नाटकों के रूप में जाना जाता था हस्तक्षेप करता है, के साथ या बिना नाटकों के लिए एक व्यापक शब्द नैतिक, नैतिकता के नाटक एक प्रकार के होते हैं रूपक जिसमें नायक से मुलाकात की है, व्यक्तित्व विभिन्न का नैतिक विशेषताएँ जो उन्हें एक बुराई पर अच्छा जीवन चुनने के लिए संकेत देने की कोशिश करती हैं। नाटकों में सबसे लोकप्रिय थे यूरोप 15 वीं और 16 वीं शताब्दी के दौरान। धार्मिक रूप से आधारित हो जाना रहस्य खेलता है मध्य युग में, उन्होंने यूरोपीय थिएटर के लिए एक अधिक धर्मनिरपेक्ष आधार की ओर एक बदलाव का प्रतिनिधित्व किया। हिल्डेगार्ड वॉन बिंगनकी ओरडो सदाचारम् (अंग्रेजीः ''ऑर्डर ऑफ द पुरीज'') सी की रचना की। 1151, एक सदी से भी अधिक समय से सबसे पहले ज्ञात नैतिकता नाटक है, और पाठ और संगीत दोनों के लिए एक विशेषता के साथ जीवित रहने के लिए एकमात्र मध्यकालीन संगीत नाटक है।

खेल मानव जीवन के विकास का आधार एवं बाल जीवन का प्राण तत्व और मूल अधिकार है। खेल के माध्यम से बालक–बालिकाएँ अपनी नैसर्गिक प्रवत्तियों एवं अपने संवेगों के प्रबन्धन को उत्तम दिशा देते हैं। सर्वसिद्ध तथ्य है कि खेलों का महत्व मानव जीवन में अनेक दृष्टिकोणों से शिक्षात्मक उपागम के रूप में है। मानवीय मूल्य, भावनात्मक विकास, धैर्य, अनुशासन, मित्रता, सहयोग, ईमानदारी, प्रतिस्पर्धा एवं नेतृत्व व्यवहार जैसे गुण, उपदेशों से अधिक बालक – बालिकाएँ खेलों के माध्यम से सहज रूप से सीख लेते हैं इसीलिए मारिया मोंटेश्नरी, गिजू भाई

जैसे शिक्षाविद् बालक – बालिकाओं को खेलों के माध्यम से शिक्षा देने के प्रबल हिमायती रहे हैं। हो भी क्यों नही क्योंकि खेल सीखने – सिखाने के वातावरण निर्माण को दिशा देने के साथ – साथ अन्य जीवन कौशलों को स्वभाव में बालक – बालिकाओं में प्रतिस्थापित कर देते हैं। अतः खेल विद्या अर्जन की दृष्टि से, स्वविकास की दृष्टि से दोहरे लाभ रूपी उपागम हैं। इसी विचारधारा निमित्त मैक्डूगल, रॉस एवं टी. पीनन जैसे विचारकों का प्रबल मत रहा है कि खेल बाल जीवन में संरक्षा, अभिवृद्धि और विकास, आनन्द, स्फूर्ति, सृजनात्मकता एवं जीवन मूल्यों के स्वाभाविक विकास के आधार हैं।

शिक्षा के क्षेत्र मे खेल

शिक्षा के क्षेत्र में खेल – कूद को स्थायी मान्यता प्राप्त है, क्योंकि खेल शिक्षा के अनेक सरोकारों की पूर्ति करता है। प्राचीनकाल से लेकर आज तक, एथेन्स – इतिहास से लेकर वर्तमान तक के सभी शिक्षाविद् इस बात को मान्यता प्रदान करते हैं कि स्वस्थ मस्तिष्क के लिए स्वस्थ शरीर आवश्यक है और स्वस्थ शरीर की रचना खेल जगत से कहीं भी अलग नहीं है। अतः शिक्षा के मानसिक सरोकार प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कहीं न कहीं सीखने – सिखाने हेतु खेल जगत से जुड़े हुए हैं, इसलिए शिक्षण विधियों में खेल आधारित विधियों का बाहुल्य है जो कि इनके महत्वगामी दृष्टिकोण को सिद्ध करता है। खेलों का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि खेल बच्चों के लिए शिक्षा प्राप्ति का एक आसान व लोकप्रिय साधन है। खेल – कूद का इतिहास उतना ही पुराना है जितना की पृथ्वी पर मानव जीवन।

खेल स्पर्धाओं का दूसरा महत्वपूर्ण लाभ खेल भावना का विकास है। ध्यान रहे कि खेल भावना केवल एक शब्द नहीं बल्कि सूचित मानवता का प्रतिनिधित्व करने वाला एक मूल्य है। सरल शब्दों में खेल भावना मानवता के तमाम अच्छे गुणों का एकीकृत व पर्यायवाची शब्द है। यदि सही सन्दर्भो की खेल भावना बालकों में विकसित हो जाये तो सूचित नागरिकता का उपागम स्वमेव सिद्ध हो जायेगा। यदि हम देखें कि संसार में जिन देशों की खेल उपलब्धियाँ उच्च हैं, प्रायः वही देश अनुशासित व विकसित हैं। शायद इसके पीछे बाल जीवन की खेल भावनाओं के संस्कार भी हो सकते हैं।

मनोवैज्ञानिक खोजों ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि वे बच्चे जो खेलों में भाग लेते हैं वे संवेगात्मक दृष्टिकोण से अधिक स्थिर और मूल्यवान होते है शीघ्र हतोत्साहित नहीं होते हैं। खेल संवृत ऊर्जा के उपयोग का बहुत अच्छा साधन है। कठोर अनुशासन के बजाय स्वानुशासन पर बल देने वाले खेल दमन, शमन से परे रखते हैं जिससे मूल्यों के स्तर में लगातार वृद्धि होती है। खेलों का क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें सम्भागी विद्यार्थी बिना किसी बाहरी दबाव के भाग लेते है तथा सभी भेद–भावों (जिसमें रंग–भेद, जाति–भेद, क्षेत्र–भेद आदि) को भूलकर मैत्री, सद्भावना तथा सहयोग जैसे मूल्यों का विकास करते हैं जो राष्ट्र के लिए हितकारी होते हैं। 11 खिलाड़ियों में स्पर्धा में और प्रतियोगिता काल में तनाव व दबाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है। खिलाड़ी अपने आप को इस स्थिति में भी संतुलित रखता है जिससे उसमें भावना का विकास होता है और मनोवैज्ञानिक विकास होता है जिससे ऐसी खेल भावना का विकास होता है यदि ऐसा न हो तो इसका अर्थ है कि खेल भावना का अभाव है और इसकी अनुपस्थिति में बालक – बालिकाएँ मानसिक रुप से बीमार हो जाते हैं एवं संतुलित व्यवहार नहीं कर पाते व मानसिक रुप से दबाव व तनाव महसूस करते हैं, जिससे उनके सामान्य जीवन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है और इसी कारण वे अपनी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं कर पाते हैं जिसके कारण जीत या उच्चांक तक पहुँचने की बात सोच भी नहीं पाते हैं।

आधुनिक मनोविज्ञानवेत्त तथा शिक्षाशास्त्री बच्चों की शिक्षा में खेल को विशेष महत्व प्रदान करते हैं। मैक्डूगल महोदय ने खेल को सामान्य तथा स्वाभाविक प्रवत्तियों कहा है। खेल सार्वभौमिक होता है, खेलने की प्रवत्तियों संसार के प्रत्येक जीव में पाई जाती है। चूँकि खेल में मूल प्रवत्तियों के स्वतन्त्र प्रकाशन का अवसर मिलता है इसलिए सभी शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा में खेल की आवश्यकता को स्वीकार किया है। पैस्टालॉजी, फ्रोबेल, मोन्टेसरी, जॉन डीवी तथा रुसो आदि शिक्षा शास्त्रियों ने अपनी – अपनी शिक्षा पद्धति में खेल को प्रमुख स्थान दिया है। खेल आत्म प्रेरित, जन्म – जात स्वाभाविक प्रवत्ति है इसमें अनुकरण की प्रवत्ति, युयुप्सा की प्रवत्ति, रचनात्मकता आदि प्रवत्तियों का

सम्मिश्रण रहता है। इसके लिए किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती।

किसी के भी जीवन में खेल भावना का एक सार्थक और महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसके द्वारा व्यक्ति के सोचने का स्तर, व्यवहार करने का तरीका और सामान्य स्वभाव परिलक्षित होता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं उसकी विशेषताओं पर इसका प्रभाव पड़ता है जैसे ईमानदारी, सहिष्णुता, दया, मित्रता, सहयोग व अनुशासन आदि। यह खेल भावना केवल खेलों के मैदान तक ही सीमित नहीं होती अपितु व्यक्ति विशेष के जीवन के सभी क्षेत्रों से इसका सम्बन्ध होता है। एक अच्छे खिलाड़ी में अच्छा स्पन्दन, अनुभूति, नियमपालन तथा आचारसंहिताओं के पालन का गुण विकसित होता है। वह जिस भावना से खेल खेलता है उसी भावना को जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनाता है। एक अच्छा खिलाड़ी अपने जीवन में सफलता के उच्च स्तर को प्राप्त करता है, वह स्वयं अपना समायोजन करता है तथा समाज व घरेलू वातावरण में समायोजित होता है, सांवेगिक रुप से वह स्थिर होता है, उसमें आत्मसंतुष्टि, आत्मविश्वास और व्यवहारिकता का स्तर उच्च होता है। वह अनुशासित, आज्ञाकारी, जागरुक और सत्यभाषी होता है, वह अनेक चुनौतियों का असानी से सामना करता है, चाहे वह विजय की ओर ले जाये या पराजय की ओर। वह खेल के मैदान में ही नेतृत्व प्रदान नहीं करता बल्कि सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी सफल नेतृत्व प्रदान करता है।

अध्ययन का महत्व

शरीर के लिये पहली आवश्यकता मनुष्य का स्वास्थ्य है। स्वास्थ्य को बनाये रखने मे खेल का महत्वपूर्ण एवं विशेष योगदान है। यदि मनुष्य नियमित रूप से खेलता रहे तो उसका शरीर ह्रष्ट – पुष्ट, शक्तिशाली, सुन्दर एवं निरोग बना रहेगा। यदि बच्चे न खेलें तो उनका जीवन नीरस बन जायेगा। जीवन में विभिन्न प्रकार के खेल छात्राओं के शारीरिक विकास में सक्रिय भूमिका का निर्वाह करते हैं क्योंकि क्रियाशीलता विकास के लिये उतनी ही आवश्यक है, जितना कि विश्राम एंव भोजन। खेल के माध्यम से बालक अपने जीवन में उत्पन्न कुण्ठाओं एवं निराशाओं की अभिव्यक्ति करता है फलस्वरूप उसका मानसिक द्वन्द्व एवं विकृतियों का मार्गान्तर हो जाता है, जो कि उसके ह्रदय में उत्पन्न होती रहती है और इस प्रकार उसके जीवन में आनन्द के साथ अतिरिक्त जीवन शक्ति का विकास भी सम्भव होता है। इसीलिये जरसील्ड ने खेल के संबंध में कहा है कि – ''खेल के द्वारा बालक अपनी क्षमताओं एवं योग्यताओं की जांच कर सकता है।'' अंग्रेजी की यह लोकोक्ति – ''खेल के मैदान खुले कक्षालय हैं।'' भी खेल के महत्व को स्पष्ट करती है। अनेक अनुसंधानों के आधार पर अब यह निर्विवाद सिद्ध हो गया है कि खेल का शारीरिक, मानसिक व सामाजिक महत्व है जिनकी संक्षिप्त पृथक – पृथक विवेचना समस्या के शैक्षिक महत्व में दी गई है।

शारीरिक महत्व

छात्रो के पूर्ण विकास के लिये जहां शिक्षा एवं अनुशासन का महत्व है, वहीं खेलकूद एवं मनोरजंन का भी अपना अलग महत्व है। खेलते – कूदते तथा प्रसन्नचित रहने वाले बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास बड़ी तेजी से होता है।

मानसिक महत्व

अरस्तू ने सत्य ही कहा है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है। मानसिक स्वास्थ्य के साथ – साथ चारित्रिक, संवेगात्मक विकास भी खेलों के माध्यम से सम्भव है, क्योंकि खेलों के माध्यम से व्यक्ति आन्तरिक द्वन्द्वों व संवेगों को अभिव्यक्त करता है।

संवेगात्मक महत्व

खेलों के माध्यम से बालकों में दिवास्वप्नों का देखना बन्द होना, संवेगों के नियंत्रण की शक्ति का विकास होना, लज्जाशीलता, चिड़चिड़ापन, कायरता, लड़कपन आदि दोषों के समाप्त होने के साथ – साथ प्रसन्नचित्त रहना व जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण का विकास होता है। चार्ल्स कोवेल का कथन है कि विशिष्ट व्यक्तित्व में नेतृत्व की विचारधारा के लिए किसी वैज्ञानिक सहायता की जरूरत नहीं होती है। उदारता पूर्ण व्यवहार व्यक्ति का एक प्राथमिक गुण होता है, और नेता को इसमें पूर्णतया दक्ष होना चाहिए।

सामाजिक महत्व

खेल के माध्यम से खिलाड़ी बालकों में निम्न सामाजिक गुणों जैसे – सामाजिक भावना, राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना, ऊँच – नीच, जाति – पाँति की भावना का समाप्त होना, दूसरों से सम्पर्क मे रहता है। इस संबंध में अनेक विद्वानों के मत निम्न प्रकार है।

व्यक्तित्व विकास महत्व

वास्तव में खेल का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक महत्व यह सिद्ध करता है कि खेल के द्वारा बालक के व्यक्तित्व का अच्छा विकास होता है।

नैतिक महत्व

नैतिक दृष्टि से खेल कार्यक्रमों से बालक में आत्म – नियन्त्रण, ईमानदारी, सच्चाई, निष्पक्षता, सहयोग तथा सहनशीलता आदि गुण उत्पन्न होते हैं। खेल से बालक सीखता है कि एक अच्छा खिलाड़ी हार जाने पर भी हतोत्साहित नहीं होता और न ही उसमें द्वेष भाव पैदा होता है।

आत्माभिव्यक्ति में महत्व

मानव की मूल प्रवत्तियों के बारे में विस्तृत अध्ययन करने वाले मनोवैज्ञानिक मैक्डूगल ने खेल को व्यक्ति की चार सामान्य मूल प्रवृत्तियों में से एक माना है। इसके विपरीत कुछ अन्य मनोवैज्ञानिक खेल को सामान्य मूल प्रवृत्ति न मान कर व्यक्ति की उत्सुकता, रचना तथा अनुकरण की मूल प्रवृत्तियों की व्यावहारिक परिणति के रूप में देखते हैं। फिर भी आमतौर पर यह स्वीकार किया जाता है कि किसी न किसी रूप में अपनी मूल प्रवत्तियों के कारण ही बालक में खेलों के प्रति अधिक रूचि उत्पन्न होती है, लेकिन कतिपय अन्य मनोवैज्ञानिकों ने बालक या व्यक्ति की खेल–वृत्ति के पीछे अन्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया हैं।

खेल नैतिकता का व्यक्तित्व मुल्यों एवं सामायोजन पर प्रभाव

निखारता है व्यक्तित्वः खेलों से जुड़ी गतिविधियां व्यक्तित्व में निखार लाती हैं। देखने में आया है कि क्लास में अलग–थलग रहने वाले बच्चे स्पोर्ट्स ऐक्टिविटीज का हिस्सा बनते ही हर काम में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने लगते हैं। तेजी से उनके दोस्त बनते हैं। उनकी परफॉर्मेंस और प्रस्तुतीकरण के ढंग में सुधार आता है। अपनी चीजें दूसरों के साथ बांटना, मदद करना, नियम–कायदों, कोच–अधिकारियों, संगी–साथियों का सम्मान करना आदि गुण उनके व्यक्तित्व में खुद–ब–खुद शामिल हो जाते हैं।

बनती है सेहतः नियमित रूप से स्पोर्ट्स ऐक्टिविटीज में हिस्सा लेने वाले बच्चे शारीरिक–मानसिक रूप से मजबूत बनते हैं। डर, तनाव, घबराहट आदि उन्हें परेशान नहीं करते. मोटापा दूर ही रहता है। यही नहीं उन्हें खुलकर भूख लगती है और नींद भी गहरी आती है. स्वस्थ शरीर के लिए ये बातें बेहद जरूरी हैं।

निभाते हैं ट्रबल शूटर की भूमिकाः खेलों में रुचि लेने वाले बच्चे सकारात्मक सोच के होते हैं। समस्याएं बढ़ाने के बजाय वे समस्याओं के हल तलाशने पर जोर देते हैं. जीवन के हर मोड़ पर वे ट्रबल शूटर की भूमिका में नजर आते हैं।

हार स्वीकारना सीखते हैंः जीत–हार खेल का हिस्सा होते हैं. इसलिए खेलों के माध्यम से बच्चे गरिमामय तरीके से अपनी जीत सेलिब्रेट करना और विनम्रता से हार स्वीकारना सीखते हैं।

करते हैं लक्ष्य का पीछाः भले ही कितनी ही दिक्कतें आए, खेलों में हिस्सा लेने वाले बच्चे लक्ष्य का पीछा करना नहीं छोड़ते। दृढ़ता, प्रतिबद्धता और आख़िरी पल तक जीतने की कोशिश करना उनके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाते हैं।

टीम भावना का विकासः खेलों में भागीदारी बच्चों में टीम भावना का विकास करती है. साथियों के साथ अपनी चीजें बांटने, धैर्य से दूसरों की बात सुनने और ग्रुप को फॉलो करने जैसे गुण बच्चों में खुद–ब–खुद विकसित होने लगते हैं।

बढ़ती है सेल्फ एस्टीमः स्पोर्ट्स ऐक्टिविटीज में मिली जीत उनकी सेल्फ एस्टीम में बढ़ोतरी करती है।

पैरेंट्स, कोच और आसपास के लोग जब उनके प्रयास, हौसले और दृढ़निश्चय की तारीफ करते हैं, उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

सीखते हैं टाइम मैनेजमेंटः एक शोध के मुताबिक स्पोर्ट्स ऐक्टिविटीज में हिस्सा लेनेवाले बच्चे टाइम मैनेजमेंट के साथ–साथ खुद को व्यवस्थित रखने में माहिर होते हैं। इसलिए अपने लक्ष्यों का पीछा करते वक्त उन्हें कोई दिक्कत नहीं आती।

निष्कर्ष

आज के समय में खेल शारीरिक मजबूती के अतिरिक्त मानसिक विकास तथा अंतराष्ट्रीय सम्बन्धो का वाहक बन गया है। इस स्थिति में खेल भावना का महत्व भी बढ़ गया है। कई राज्यों ने खेलो को उद्योग का दर्जा देना आरम्भ कर दिया है। इस स्थिति में खेलो के लिए आचार सहिंता अत्यंत आवश्यक हो गई है। वास्तव में नैतिकता स्वयं व्यक्ति के अंतर्मन का भाव है, परन्तु उसे विधिक प्रारूप देने से नैतिकता पालन में संवर्धन होगा।

मानव जाति अपनी चरमोन्नति के लिए सदैव सत्य के नये मानक स्थापित करना चाहती है। विकास की प्रक्रिया में समस्याएं आती हैं, इन समस्याओं के निदान व सत्य प्राप्ति के लिए उसे कठिन दौर से गुजरना होता है। सफलता – असफलता, प्रयत्नों व प्रयासों के कठिन दौर से गुजरने के बाद प्राप्त होता है। समस्या का निदान व सत्य का स्थायी मानक अर्थात् खोज का निष्कर्ष, जिसके आधार पर ही मानव जाति के भावी विकास की योजनाऐं बनती हैं। अतः कह सकते हैं कि मानवीय सभ्यता के विकास का आधार है, अनुसंधान। प्रत्येक समस्या की दृष्टि से अनुसंधान का अन्तिम पड़ाव समस्या के मंथन से प्राप्त निष्कर्ष होता है। निष्कर्ष जो एक ओर उपलब्धि होता है, वहीं दूसरी ओर मानव जाति के विकास की दिशा।

संदर्भ सूची

1. ओड लक्ष्मीलाल के., (1994). *"शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि"* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
2. कपिल एच. के., *''अनुसंधान विधियाँ''*, एच .पी. भार्गव बुक हाऊस, 4ध्230, कचहरी घाट, आगरा।
3. कपिल एच. के., *''सांख्यिकी के मूल तत्त्व''*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा – 2, 148
4. केवल सिंह, (1992). *''ए स्टडी ऑफ फिजिकल एण्ड पर्सनलटी एंड ऑफ बॉक्सर एट डिफरेन्ट लेवल ऑफ कम्पीटीशन।''*
5. चार्टर वी., (1959). *गुड इन्ट्रोडक्शन टू एज्यूकेशन रिसर्च,* नेव्योर्क न्यूयॉर्क एपल्टन सेन्चुरी क्राफ्ट्स।
6. खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता (2004) रपट 32 वीं राज्य स्तरीय मंत्रालयिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता – 2004, फरवरी, 2005, *शिविरा पत्रिका* पृ. सं. 39।
7. गुप्ता वी. पी., (1968). ''परसनैलिटी करेक्टरस्टिक्स ऑफ हॉकी चौम्पीयन्स'' *आई. एस. टी. एच. पी. आर. जनरल,* जनवरी 1968 पृ. सं. 18–2।
8. जरशिल्ड ए. टी., *"किशोर मनोविज्ञान"* बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
9. जॉर्ज जे. मोले, (1964) *"दी साइन्स ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च,* नई देहली, यूरेशिया पब्लिशिंग हाऊस लि, पृ. 112।
10. जौहर पी., (1987). ''इनफ्लुएन्स ऑफ फिजिकल एज्यूकेशन ऑफ द पोस्ट एडोलसेन्ट गर्ल्स'' ए साइक्लोजीकल स्टडी।
11. त्यागी जी. एस. डी., (1988). "शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार" 1994 विनोद पुस्तक मंदिर आगरा। लोकमान्य शिक्षक वर्ष 1988 अंक वर्ष 12 राजस्थान विद्यापीठ लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक।
12. धांगड़ श्रीचन्द, (1971). ''अच्छे खिलाड़ी तथा न खेलने वाले किशोर छात्रों का दुश्चिन्ता परिणाम'' एम. एड. 1971 पृ. सं. 89 राजस्थान विश्वविद्यालय।

****